पुस्तक संख्या : 483 :

سلسلہ مطبوعات: ۴۸۳

हिन्दी से उर्दू सीखिये

डा0 नूरुल हसन हाशमी

ہندی سے اردو سیکھئے

ڈاکٹر نورالحسن ہاشمی

उ0 प्र0 उर्दू अकादमी लखनऊ

اترپردیش اردو اکادمی، لکھنؤ

पुस्तक संख्या : 483

سلسلۂ مطبوعات: ۴۸۳

हिन्दी से उर्दू सीखिये

डा0 नूरुल हसन हाशमी

ہندی سے اردو سیکھیے

ڈاکٹر نورالحسن ہاشمی

उ0 प्र0 उर्दू अकादमी लखनऊ

اتر پردیش اردو اکادمی، لکھنؤ

दो शब्द

उ0 प्र0 उर्दू अकादमी उर्दू भाषा के प्रचार प्रसार एवं विकास की निरन्तर कोशिश कर रही है। अकादमी ने प्रदेश में लगभग पांच दर्जन उर्दू कोचिंग सेन्टर स्थापित किये हैं, जहां उर्दू पढ़ने के इच्छुक व्यस्कों को उर्दू पढ़ाई जा रही है।

उर्दू ऐसी लोक प्रिय भाषा है जिसे बिना पढ़े लिखे भी लोग समझते और बोलते हैं। उर्दू लिखने पढ़ने के लिए इसके रस्मुल ख़त (लिपि) का ज्ञान अति आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अकादमी ने कई वर्ष पूर्व "हिन्दी से उर्दू सीखिये" पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसका छठा संस्करण आपके हाथों में है।

डा0 नूरुल हसन हाशमी उर्दू के महान सहित्यकार एवं आलोचक थे। उन्होंने हिन्दी के माध्यम से उर्दू सिखाने के लिए ख़ास तौर से 'हिन्दी से उर्दू सीखिये' पुस्तक लिखी थी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक हिन्दी क्षेत्रों में उर्दू को विकसित करने में अहम भूमिका अदा करेगी। इसके माध्यम से बड़ी संख्या में लोग उर्दू सीख सकेंगे।

उ0 प्र0 उर्दू अकादमी
गोमती नगर
लखनऊ

डा0 नवाज़ देवबन्दी
चेयरमैन

उ0प्र0 उर्दू अकादमी © اُتر پردیش اُردو اکادمی

हिन्दी से उर्दू सीखिये

डा0 नूरुल हसन हाशमी

ہندی سے اُردو سیکھیے

ڈاکٹر نورالحسن ہاشمی

छठा संस्करण	2015	چھٹا ایڈیشن
संख्या पांच हजार	5000	تعداد پانچ ہزار
मूल्य पच्चीस रूपये	Rs. 25.00	قیمت پچیس روپے

एस0 रिज़वान, सचिव उ0 प्र0 उर्दू अकादमी ने मे0 इम्प्रेशन प्रिन्ट हाउस, लाटूश रोड लखनऊ से छपवार कर कार्यालय उर्दू अकादमी स्थित विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित किया।

ایس۔ رضوان، سکریٹری اُتر پردیش اردو اکادمی نے میسرس امپریشن پرنٹ ہاؤس، لاٹوش روڈ، لکھنؤ سے
چھپوا کر دفتر اردو اکادمی واقع وبھوتی کھنڈ، گومتی نگر، لکھنؤ سے شائع کیا۔

हिन्दी	अक्षर का नाम	उर्दू अक्षर	नं0
अ	अलिफ़	ا	१
ब	बे	ب	२
प	पे	پ	३
त	ते	ت	४
ट	टे	ٹ	५
स	से	ث	६
ज	जीम	ج	७
च	चे	چ	८
ह	हे	ح	९
ख़	ख़े	خ	१०
द	दाल	د	११
ड	डाल	ڈ	१२
ज़	ज़ाल	ذ	१३
र	रे	ر	१४
ड़	ड़े	ڑ	१५
ज़	ज़े	ز	१६
ज	जे	ژ	१७
स	सीन	س/ـس	१८
श	शीन	ش/ـش	१९
स	स्वाद	ص	२०
ज़	ज्वाद	ض	२१
त	तो	ط	२२
ज़	ज़ो	ظ	२३
अ*	ऐन	ع	२४
ग़	ग़ैन	غ	२५
फ़	फ़े	ف	२६
क़	क़ाफ़	ق	२७
क	काफ़	ک	२८
ग	गाफ़	گ	२९
ल	लाम	ل	३०
म	मीम	م	३१
न	नून	ن	३२
व	वाव	و	३३
ह	हे	ہ	३४
ह	दोहरी हे	ھ	३५
अ	हमज़ा	ء	३६
य	छोटी ये	ی	३७
य	बड़ी ये	ے	३८

नोट :–

1. अक्षर नं0 17 का प्रयोग बहुत ही कम शब्दों के लिये होता है। यह फ़ारसी से लिया गया है। और तमिल भाषा में भी है।
2. अक्षर नं0 18 और 19 में 'सीन' और 'शीन' दो तरह से लिख सकते हैं।
3. अक्षर नं0 35 ''दोहरी हे'' (या, दोचश्मी 'हे') का प्रयोग आगे बताया जायेगा।
4. अक्षर नं0 36 हमज़ा वास्तव में कोई अक्षर नहीं है बल्कि एक तरह का चिन्ह है जो अक्षर नं0 33,(و) 37 (ی) और 36 (ے) के साथ मिलकर कोई मात्रा का काम देता हैं जैसा कि आगे बताया जाएगा।

---

* यह अक्षर 'अ' (ع) विभिन्न मात्राओं के साथ प्रयोग होता है। उदाहरण आगे मिलेंगे।

हिन्दी से उर्दू सीखिये

उत्तरी भारत में जो भाषा बोली जाती है उसे उर्दू वाले उर्दू कहते हैं और हिन्दी वाले हिन्दी। मगर वास्तव में वह हिन्दुस्तानी है जिसके लिए गांधी जी ने बल देकर कई दफ़ा कहा और लिखा था कि हिन्दी और उर्दू दोनों लिखावटों में लिखना और पढ़ना जानना चाहिए परन्तु अब बहुत से हिन्दी वाले उर्दू लिखावट नहीं जानते। इसलिए जो लोग इस उर्दू लिखावट का रूप सीखना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक विशेषकर छपवाई जा रही है। आशा है कि वे इसे बड़ी सावधानी से सीख लेंगे इस लिए कि उन्हें कोई दूसरी भाषा नहीं सीखनी होगी (जैसे, अंग्रेजी, बंगाली, गुजराती, मराठी या तमिल आदि जिसमें उत्तरी भारत वालों को भाषा भी सीखनी पढ़ती है और उसकी लिपि भी)।

यहां तो बोलचाल की भाषा एक ही है केवल लिपि सीखना होगी। और कोई लिपि हो थोड़े अभ्यास से आ जाती है और जब लिखावट आ जायेगी तो उर्दू साहित्य को भी आसानी से पढ़ और समझ सकेंगे।

उर्दू लिपि की दो विशेषताएं है। (1) यह दाएं से बाएं लिखि और पढ़ी जाती है। (2) इसमें अधिकतर शब्द मिलाकर लिखे जाते हैं अर्थात अक्षरों को छोटा करके एक दूसरे से मिला देते हैं।

उर्दू भाषा में 38 अक्षर होते हैं। जिनमें से अधिकतर तो वही हैं जो हिन्दी में प्रचलित हैं (हां उनके नाम दूसरे हैं) और थोड़े से अरबी और फ़ारसी से लिए गए जो आगे बताए जाएंगे।

उर्दू अक्षर अधिकतर सीधी लकीरों और गोल लकीरों से बनाए जाते हैं। यह लकीरें ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर दाएं से बाएं या बाएं से दाहिनी ओर हो सकती हैं और गोल आकार भी दाएं से बाएं या बाएं ओर से दाएं ओर होते हैं, जैसे–

ں ‘ ں ‘ ⟶ ‘ ⟵ ‘ ↓| ‘ ↑|
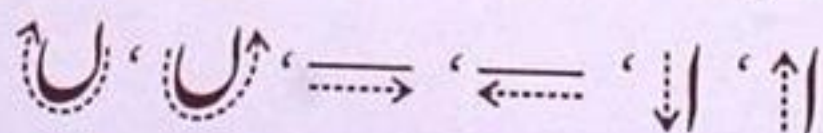
उर्दू के कई अक्षरों में एक, दो या तीन बिन्दु ऊपर, नीचे या बीच में लगाए जाते हैं जिसके कारण एक जैसा लिखा हुआ अक्षर दूसरा अक्षर बन जाता है। बिन्दुओं के अतिरिक्त (ط) चिन्ह का प्रयोग ट, ड और ड़ लिखने में किया जाता है।

ये सब बातें दूसरे पृष्ठ पर दी हुई उर्दू अक्षरों की सूची से स्पष्ट हो जाएंगी।

नोटः– इन अक्षरों को कई बार लिख–लिखकर भली–भांति पहचान लीजिए तब आगे बढ़िये।

हुए जोड़ देते हैं। उसे हिन्दी की तरह अलग से नहीं लगाते, जैसे–

(आ) ع+ا = عا (बा) ب+ا = با

(का) ک+ا = کا (जा) ج+ا = جا

(मा) م+ا = ما (सा) س+ا = سا

(ला) ل+ا = لا (ज़ा) ض+ا = ضا

(5) "ऊ" का सुर लाने के लिए "و" (अक्षर) पर उल्टे "पेश" (ٗ) का चिन्ह लगाया जाता है, जैसे–

दूर دُور पूरा پُورا जूट جُوٹ बूट بُوٹ ऊन اُون

यहाँ ب-ج-پ को छोटा करके अक्षर (و) में जोड़कर उन पर उल्टा पेश (ٗ) लगा दिया गया है 'अलिफ़' (ا) और 'दाल' (د) पूरे लिखे गये हैं जैसे कि 4 (ii) में बतलाया जा चुका है कि यह अक्षर जब किसी शब्द के आरम्भ में आते हैं तो पूरे लिखे जाते हैं।

(6) "ओ" की आवाज़ की मात्रा के लिए भी अक्षर (و) का प्रयोग करते हैं। उसे ओ (ो) का चिन्ह माना जाता है।

जैसे–(डोर) ڈور , (डोल) ڈول , (मोर) مور , (चोर) چور

(ओस) اوس , (दो) دو , (शोर) شور , (ज़ोर) زور

यहाँ भी چ-م-ش को छोटा करके अक्षर (و) में जोड़ दिया गया है अलिफ़ (ا), दाल (د), डाल (ڈ), और ज़े (ز), 4(ii) की तरह अक्षर वाव (و) में जोड़े नहीं जाते।

(7) "औ" के सुर के लिए अक्षर वाव (و) के ऊपर ज़बर (َ) की मात्रा लगा देते हैं और उसे "ौ" की मात्रा समझा जाता है, जैसे –

(कौन) کَون , (चौड़ा) چَوڑا , (दौड़ा) دَوڑا , (और) اَور

(सौ) سَو , (नौ) نَو ,

यहाँ भी अक्षर ک،چ،س और ن को छोटा करके अक्षर वाव (و) में मिला दिया गया है।

मात्राएँ

(1) उर्दू में चार शेष मात्राओं के चिन्ह यह हैं :–

(َ) यह टेढ़ी लकीर का छोटा सा चिन्ह जब किसी अक्षर के ऊपर लगाया जाता है तो "अ" का सुर उस अक्षर में मिल जाता है। जैसे हिन्दी में "ब" को "बा" पढ़ते हैं उसमें कोई चिन्ह लगाने की आवश्यकता नहीं होती। उर्दू में जब "ब" के ऊपर यह चिन्ह लगा दिया जाएगा तब (بَ) उसे "ब" पढ़ सकेंगे। इसी तरह ज= جَ , ल= لَ , म= مَ , आदि। इस चिन्ह को "ज़बर" कहते हैं।

(2) (ِ) यही टेढ़ा छोटा चिन्ह जब किसी अक्षर के नीचे लगाया जाए तो उसे "ज़ेर" कहते हैं और उस अक्षर में "इ" का सुर मिल जाता है जैसे– बि= بِ , जि= جِ , लि= لِ , मि= مِ , आदि।

(3) (ُ) इस चिन्ह को "पेश कहते हैं। यह जिस अक्षर के ऊपर लगा दिया जाता है उस अक्षर में "उ" का सुर सम्मिलित हो जाता है जैसे– बु= بُ , जु= جُ , लु= لُ , मु= مُ , आदि।

(4) "आ" का सुर लाने के लिए –

(i) अगर वह अलिफ़ (ا = अ) के साथ आता है तो उसके ऊपर यह चिन्ह (~) लगा दिया जाता है (इसे "मद" कहते हैं) जैसे आग= آگ , आम= آم , आज= آج , आस= آس , आदि।

(ii) अगर यह सुर, द, ड, ज़, र, ड़, ज़, द (و، ز، ژ، ر، ڈ، ذ، د) के पश्चात आता है तो उनके आगे पूरा अलिफ़ लिख दिया जाता है जैसे–
दा = دا , डा = ڈا , रा = را , वा = وا , राम = رام , रात = رات , दवा = دوا , आदि।

(iii) अन्य दूसरे अक्षरों के पश्चात अगर "आ" का सुर लाया जाए तो मूल अक्षर को छोटा करके उसमें अलिफ़ (ا) का चिन्ह नीचे से ऊपर ले जाते

ऊपर ज़बर (َ) का चिन्ह बना देते हैं और कभी नहीं भी बनाते, समझ लेते हैं और (ے) के नीचे दो बिंदियाँ अधिकतर नहीं लगाते,
जैसे :–

(है) ہَے (मै) مَے (कै) کَے (शै) شَے (जै) جَے (बै) بَے (ऐ) اَے

(ii) अगर यह मात्रा बीच शब्द में आए तो बड़ी ये (ـَیـ) को 8(ii) और 9(ii) की तरह छोटा करके बीच में जोड़ देते हैं और उसके ऊपर ज़बर(َ) लगा देते हैं और कभी नहीं लगाते, समझ लेते हैं, जैसे –

(मैल) مَیل = ل+ے+م (कैसा) کیسا = ا+س+ے+ک

(हैट) ہَیٹ = ٹ+ے+ہ (बैर) بَیر = ر+ے+ب

नोट :–

1- उर्दू अक्षरों की दी हुई सूची में आपने देखा होगा कि कुछ अक्षरों के सुर एक जैसे हैं, जैसे

(अ) स = ث، س، ص

(ब) ज़ = ذ، ز، ض، ظ

(स) त = ت، ط

(द) अ = ا، ع، ء

(य) हे = ح، ہ

(अ) इस खण्ड में अधिकतर प्रयोग 'س' का होता है, 'ث' और 'ص' कुछ अरबी शब्दों के साथ आते हैं जो उर्दू में सम्मिलित हैं। हिन्दी के शब्दों में केवल 'س' का प्रयोग है।

(ब) यह अक्षर अरबी / फ़ारसी से उर्दू में आए हैं और अरबी / फ़ारसी के शब्दों ही में उनका प्रयोग होता है।

(स) यह दोनों अक्षर अरबी / फ़ारसी में भी हैं परन्तु हिन्दी शब्दों में केवल 'ت' का प्रयोग है।

(द) "ع" अरबी / फ़ारसी शब्दों में आता है "ء" तो एक प्रकार का चिन्ह है जो, ے، ی، و के साथ मिलकर अ, ई, ए की मात्रा का सुर निकालता

(8) "ई" के सुर के लिए उर्दू में हिन्दी की मात्रा "ी" की तरह कोई चिन्ह नहीं है।

(i) उर्दू में यह सुर जिस शब्द या अक्षर के साथ आता है उसके अन्त में (ی) का अक्षर लगा देते हैं या जोड़ दिया जाता है। कभी उसके साथ "ज़ेर" (ِ) का चिन्ह उसके नीचे लगा देते हैं और कभी नहीं भी लगाते और अधिकतर छोटी (ی) के नीचे कोई बिन्दी नहीं लगाते, जैसे –

(फ़ी) فِی (शी) شِی (री) رِی (दी) دِی (जी) جِی (बी) بِی (ई) اِی
(ही) ہِی (ली) لِی (की) کِی यहाँ भी ب۔ج۔ش۔ف۔ک۔ل۔ہ को छोटा करके " ی " में मिला दिया गया है।

(ii) यह मात्रा अगर बीच शब्द में आए तो बीच ही में "य" (ی) को छोटा करके जोड़ देते हैं और "य"(ی) के नीचे दो बिन्दु लगा देते हैं, जैसे–
(टीन) ٹ+ی+ن = ٹین (खीर) کھ+ی+ر = کھیر (पीर) پ+ی+ر = پیر

(9) "ए" के लिए भी उर्दू में कोई अलग चिन्ह हिन्दी की मात्रा (े) के समान नहीं है बल्कि वह सुर जिस शब्द या अक्षर के साथ आता है उसके अंत में बड़ी "ये" (ے) का अक्षर लगा दिया या जोड़ दिया जाता है। कभी उसके नीचे ज़ेर (ِ)का चिन्ह बना देते हैं और कभी नहीं भी बनाते हैं और अधिकतर इस बड़ी "ये" (ے)के नीचे दो बिंदियाँ नहीं लगाते, जैसे –

(गे) گے (से) سے (ले) لے (दे) دے (जे) جے (बे) بے (ए) اے

(ii) यह मात्रा अगर बीच शब्द में आए तो 8(ii) की तरह बीच शब्द में " ے " को छोटा करके जोड़ देते हैं और उसके नीचे दो बिंदियाँ बना देते हैं, जैसे–

(लेना) ل+ے+ن+ا=لینا (बेटा) ب+ے+ٹ+ا=بیٹا (मेरा) م+ے+ر+ا=میرا
(भेद) بھ+ے+د=بھید (देना) د+ے+ن+ا=دینا (तेरा) ت+ے+ر+ا = تیرا

(10) (i) "ऐ" के लिए भी हिन्दी की मात्रा (ै) के समान उर्दू में कोई चिन्ह नहीं है। अक्षर के अंत में बड़ी "य" (ے) लगाकर या जोड़कर उसके

4- जहाँ "नून" (ں) का सुर नाक से निकलता है वहाँ ں के अन्दर की बिन्दी नहीं लगाते जब यह अक्षर किसी शब्द के अन्त में आये, जैसे–

(नहीं) نہیں (हैं) ہیں (हूँ) ہوں (हाँ) ہاں (माँ) ماں

(और उदाहरण आगे आएंगे)

परन्तु जब यह बिना बिन्दु वाला अक्षर किसी शब्द के दो या तीन अक्षरों के बीच में आ जाये तो बिन्दु लगा देते हैं और उसके ऊपर (ٚ) का चिन्ह लगा देते हैं और कभी यह चिन्ह नहीं लगाते मगर पढ़ते (ं) के सुर से हैं जैसे–

(आँच) آنٚچ = آ+ن+چ (जंग) جنگ = ج+ن+گ (रंग) رنگ = ر+ن+گ

अक्षरों की मिलावट

पहले बताया जा चुका है कि उर्दू के अक्षरों को छोटा करके जोड़ा जाता है, चाहे यह किसी के आरम्भ में आए या बीच में या अन्त में। उनके अंश कैसे किये जाते हैं उनका ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है। उर्दू अक्षर अपने आकार के अनुसार इस अनुक्रम में लिखे जा सकते हैं :–

ا، د، ڈ، ذ، ر، ڑ، ز، و = 1

ب، پ، ت، ٹ، ث = 2

ج، چ، ح، خ = 3

س/س، ش/ش، ص، ض = 4

ط، ظ = 5

ع، غ = 6

ف، ق = 7

ک، گ = 8

ل، م، ن = 9

ہ، ھ = 10

ء، /، / = 11

ی، ے = 12

ऊपर के हर ग्रूप का विवरण अलग–अलग क्रम अनुसार इस प्रकार है :–

है, जैसे– (गऊ) گئو (गई) گئی (गए) گئے

(य) यह दोनों अक्षर अरबी और फ़ारसी में भी हैं। हिन्दी शब्दों में केवल ہ (ह) का प्रयोग होता है।

इस तरह आप देख सकते हैं कि उर्दू में हिन्दी की अपेक्षा कुछ अक्षरों के सुर अधिक हैं।

2- अक्षरों की दी हुई सूची में नं0 35 पर एक अक्षर ''दोहरी'' ھ ''हे'' (या दो चश्मी ''हे'') के नाम से है। यह वास्तव में एक अक्षर नहीं है। केवल एक चिन्ह है जो हिन्दी के उंन अक्षरों में लगाया ज़ाता है जिन में ''ह'' का सुर जोड़ना पड़ता है।

हिन्दी में (म्ह, न्ह, ल्ह को छोड़कर) उसके लिये अलग अक्षर होता है परन्तु उर्दू में उसे मूल अक्षर को छोटा करके उसमें ھ जोड़ देते हैं, जैसे–

ध = دھ = ھ+د   ख = کھ = ھ+ک   घ = گھ = ھ+گ

ठ = ٹھ = ھ+ٹ   ढ़ = ڑھ = ھ+ڑ   थ = تھ = ھ+ت

ढ = ڈھ = ھ+ڈ   भ = بھ = ھ+ب   फ = پھ = ھ+پ

झ = جھ = ھ+ج   छ = چھ = ھ+چ   ल्ह = لھ = ھ+ل

म्ह = مھ = ھ+م   न्ह = نھ = ھ+ن

3- तशदीद = जहाँ कहीं किसी अक्षर की आवाज़ दो दफ़ा निकलती है तो हिन्दी में उस अक्षर में उससे पहले उसी अक्षर का आधा अक्षर जोड़ कर दोहरी आवाज़ निकाली जाती है, जैसे– बिल्ली, कुत्ता, कच्चा, मिट्टी आदि– उर्दू में उसी अक्षर के ऊपर (ّ) का चिन्ह बना देते हैं, उसे ''तशदीद'' कहते हैं। जैसे–

कुत्ता = کُتّا = ا+ت+ت+ک

बिल्ली = بِلّی = ی+ل+ل+ب

सच्चा = سچّا = ا+چ+چ+س

लट्टू = لَٹّو = ؤ+ٹ+ٹ+ل

चक्की = چَکّی = ی+ک+ک+چ

दूसरे ग्रूपों के अक्षर जब और ग्रूपों के आरम्भ, बीच या अन्त में आते हैं तो क्रमशः उनका छोटा आकार इस प्रकार हो जाता है :–

अन्त में	बीच में	आरम्भ में	अक्षर		
ـا	ـا	ا	ا	=	१
بر	بر	بـ ، ﺑ	ب، پ، ت، ٹ، ث	=	२
ـج ، ـخ	ـجـ	جـ	ج، چ، ح، خ	=	३
ـس/ـس/لص، سص/ـص	سـ/شـ/صـ	سـ/شـ/صـ	س/ش، س/ش، ص، ض	=	४
ـط، لط، سط	ـط	ط، ظ	ط، ظ	=	५
لع، بغ	ـعـ، ـعـ، ـغـ	عـ، غـ	ع، غ	=	६
لف، سف، لق، سق	ـفـ، ـقـ	قـ، فـ	ف، ق	=	७
ـک، ـگ	کـ/کا	کـ/کا	ک، گ	=	८
ل/لم/ن	لـ، مـ، نـ	لـ، مـ، نـ	ل، م، ن	=	९
ـہ، ـہ	ـہـ/ـہـ	ہـ	ہ	=	१०
—	ٔ	—	ٔ	=	११
ی، ے	ـیـ	یـ، یا	ی، ے	=	१२

नोट :– ک और گ जब अलिफ (ا) या लाम (ل) से मिलते हैं तो उनका छोटा आकार (کا) और (کل), (گا) और (گل) हो जाता है।

अब ऊपर लिखे हुए जोड़ों के उदाहरण नीचे लिखे जा रहे हैं :–

दो अक्षरों के शब्द

चुन = چُن = چُ+ن चढ़ = چڑھ = چَ+ڑھ आप = آپ = آ+پ

धन = دھن = دَھ+ن घर = گھر = گھ+ر आज = آج = آ+ج

इस ग्रूप के अक्षर जब किसी शब्द के आरम्भ में आते हैं या इसी ग्रूप में एक दूसरे के साथ लिखे जाते हैं तो पूरे लिखे जाते हैं, छोटा करके किसी अन्य अक्षर में जोड़े नहीं जाते। परन्तु जब ये किसी दूसरे अक्षर के अन्त में आएंगे तो उसमें निम्नलिखित ढंग से मिला दिये जाएंगे।

(अ) जब अलिफ़ (ا) अन्त में आए :–

(ता) تا = ا+ت   (सा) سا = ا+س   (जा) جا = ا+ج   (बा) با = ا+ب

(का) کا = ا+ک   (क़ा) قا = ا+ق   (फ़ा) فا = ا+ف   (आ) عا = ا+ع

(या) یا = ا+ی   (हा) ہا = ا+ہ   (ना) نا = ا+ن   (मा) ما = ا+م

(ब) जब ذ ڈ د अन्त में आएं :–

(ज़िद) ضد=د+ضِ   (सद) سد = د+س   (जद) جد = د+جَ   (बद) بد = د+بَ

(गिद्ध) گِدھ=دھ+گِ   (कद) کد = د+ک   (क़द) قد = د+ق   (ग़द) غد = د+غَ

(यद) ید = د+ی/ے   (रसद) رَسَد=د+س+رَ   (मदद) مدد = د+دَ+مَ   (वल्द) وَلد = د+ل+وَ

(स) जब ز ڑ ر किसी अक्षर के अन्त में मिले :–

(फ़र) فَر = ر+فَ   (सिर) سِر = ر+سِ   (जड़) جَڑ = ڑ+جَ   (पर) پَر = ر+پَ

(हर) ہر = ر+ہ   (नर) نَر = ر+نَ   (मुड़) مُڑ = ڑ+مُ   (घर) گھر = ر+گھَ

(द) वाव (و) का जोड़ जब यह किसी अक्षर के अन्त में हो :–

(लो)لو=و+ل   (धो)دھو=و+دھ   (जो)جو=و+ج   (जौ)جو=و+جَ   (बू)بُو=و+ب

(यो)یو=و+ی/ے   (हु)ہُو=و+ہُ   (हो)ہو=و+ہ   (को)کو=و+ک   (शोर)شور=ر+و+ش

नोट :– आपने देखा कि " و " जब किसी अक्षर के अन्त में मिलता है तो वह ـو या لو का आकार ले लेता है।

**पी = پی = پ+ی	गुल = گُل = گ+ل	बद = بد = بَ+د
जी = جی = جِ+ی	बम = بَم = بَ+م	हद = حد = حَ+د
घी = گھی = گھِ+ی	तुम = تُم = تُ+م	खड = کھڈ = کھَ+ڈ
की = کی = کِ+ی	कम = کَم = کَ+م	क़द = قد = قَ+د
दी = دی = دِ+ی	गुम = گُم = گُ+م	पर = پر = پَ+ر
भी = بھی = بھِ+ی	हम = ہَم = ہَ+م	उड़ = اُڑ = اُ+ڑ
ली = لی = لِ+ی	दे = دے = د+ے	जड़ = جڑ = جَ+ڑ
ले = لے = ل+ے	के = کے = ک+ے	

* पढने में केवल "कि" की आवाज़ निकलती हैं।

** के नीचे दो बिन्दयां अधिकतर नहीं लगाते हैं।

दो अक्षरों के वाक्य

उसने खाना खाया =	اُس نے کھانا کھایا	आम खा ले =	آم کھالے
गड़बड़ न कर =	گڑبڑ نہ کر	सच सच कह =	سَچ سَچ کہہ
वह आया था =	وُہ آیا تھا	छत पर चढ़ =	چھت پر چڑھ
यह फल है =	یہ پھل ہے	ख़त लिख =	خط لکھ
वो ख़त पढ़ =	وُہ خط پڑھ	अब सो रह =	اَب سو رَہ
आज जा कल आ =	آج جا کل آ	शक मत कर =	شک مَت کر
मुझ को दे दे =	مجھ کو دے دے	तू कब आया =	تو کب آیا
गुम सुम मत रह =	گم صم مَت رہ	रस पी लो =	رَس پی لو
पुल पर जा =	پُل پر جا	दस तक गिन =	دس تک گن
नल का पानी पी ले =	نل کا پانی پی لے	बस अब चुप रह =	بس اب چپ رَہ

धुन = دُھن = دُھ+ن	डर = ڈر = ڈ+ر	आस = آس = آ+س
सुन = سُن = سُ+ن	हर = ہَر = ہ+ر	आग = آگ = آ+گ
गिन = گِن = گِ+ن	इस = اِس = اِ+س	आम = آم = آ+م
बो = بو = ب+و	उस = اُس = اُ+س	आन = آن = آ+ن
बू = بُو = بُ+و	बस = بَس = بَ+س	आह = آہ = آ+ہ
तो = تو = ت+و	दस = دَس = دَ+س	अब = اَب = اَ+ب
तू = تُو = تُ+و	रस = رَس = رَ+س	तब = تَب = تَ+ب
जो = جو = ج+و	बत = بَط = بَ+ط	जब = جَب = جَ+ب
दो = دو = د+و	ख़त = خَط = خَ+ط	सब = سَب = سَ+ب
सो = سو = س+و	सफ़ = صَف = ص+ف	ढब = ڈھَب = ڈَھ+ب
सौ = سَو = سَ+و	हक़ = حَق = حَ+ق	था = تھا = تھ+ا
लो = لو = ل+و	दिक़ = دِق = دِ+ق	थी = تھی = تھِ+ی
नौ = نَو = نَ+و	बक = بَک = ب+ک	तुझ = تُجھ = تُ+جھ
हो = ہو = ہ+و	शक = شَک = شَ+ک	मुझ = مُجھ = مُ+جھ
कह = کَہہ = کَ+ہ	बल = بَل = بَ+ل	जज = جَج = جَ+ج
*किह = کِہ = کِ+ہ	चल = چَل = چَ+ل	हज = حَج = حَ+ج
वह = وہ = و+ہ	कल = کَل = کَ+ل	सच = سَچ = سَ+چ
यह = یہہ/یہ = ی+ہ	का = کا = ک+ا	बच = بَچ = بَ+چ

तीन अक्षरों के वाक्य

जो कहो वही करो	=	جو کہو وہی کرو
जिसके पास अक़्ल है वह बड़ा	=	جس کے پاس عقل ہے وہی بڑا
घड़ी में कै बजे हैं ?	=	گھڑی میں کَے بجے ہیں؟
खाओ पियो मज़े करो	=	کھاؤ پیو مزے کرو
मगर जुर्म न करो	=	مگر جرم نہ کرو
खुदा से दुआ है	=	خدا سے دُعا ہے
कि तुम खुश रहो	=	کہ تُم خوش رہو
यही बात मैंने कही थी	=	یہی بات میں نے کہی تھی
रोक लो गर ग़लत चले कोई	=	روک لو گر غلط چلے کوئی
बख़्श दो गर ख़ता करे कोई	=	بخش دو گر خطا کرے کوئی
बाग़ में फूल खिले हैं	=	باغ میں پھُول کھلے ہیں
फूल सुर्ख़ और ज़र्द हैं	=	پھُول سرخ اور زرد ہیں
कली को न तोड़ो *	=	کلی کو نہ توڑو
एक सेब खा लो	=	ایک سیب کھالو
वह ताश खेल रहे हैं।	=	وہ تاش کھیل رہے ہیں
मोर नाच रहा है	=	مور ناچ رہا ہے
दूध पी कर सो रहो	=	دُودھ پی کر سو رہو
जो वक़्त बीत गया सो गया	=	جو وقت بیت گیا سو گیا
क्या पेट में दर्द हुआ ?	=	کیا پیٹ میں درد ہوا؟
कुछ काम की बात करो	=	کچھ کام کی بات کرو

* उर्दू में 'ना' को 'ह' (ہ) के साथ लिखते हैं।

(देखो पृष्ठ 23, नियम (1))

तीन अक्षरों के शब्द

जाओ = جاؤ = ج+ا+ؤ	लाल = لال = ل+ا+ل	बाप = باپ = ب+ا+پ
लाये = لائے = ل+ا+ئے	अगर = اگر = ا+گ+ر	बात = بات = ب+ا+ت
खाओ = کھاؤ = کھ+ا+ؤ	मगर = مگر = م+گ+ر	जाट = جاٹ = ج+ا+ٹ
पियो = پیو = پِ+ی+و	नाम = نام = ن+ا+م	रात = رات = ر+ا+ت
वक़्त = وَقْت = وَ+قْ+ت	मोर = مور = م+و+ر	सात = سات = س+ا+ت
सख़्त = سَخْت = سَ+خْ+ت	वही = وہی = و+ہ+ی	ताज = تاج = ت+ا+ج
सब्ज़ = سبْز = سَ+بْ+ز	हार = ہار = ہ+ا+ر	ताश = تاش = ت+ا+ش
सुर्ख़ = سرخ = سُ+ر+خ	हरा = ہرا = ہ+ر+ا	पास = پاس = پ+ا+س
जुर्म = جزم = جُ+ز+م	हवा = ہوا = ہ+و+ا	साफ = صاف = ص+ا+ف
चचा = چچا = چَ+چ+ا	एक = ایک = ا+ے+ک	तेज = تیز = ت+ے+ز
फूल = پھُوْل = پھ+و+ل	भला = بھلا = بھ+ل+ا	शेर = شیر = ش+ے+ر
क्या = کیا = ک+ی+ا	यही = یہی = ی+ہ+ی	खुदा = خدا = خُ+د+ا
किया = کِیا = کِ+ی+ا	फली = پھلی = پھ+ل+ی	दुआ = دُعا = دُ+ع+ا
दूध = دُودھ = د+وُ+دھ	मुंह = منہ = مُ+ن+ہ	सब्र = صبر = صَ+بْ+ر
खीर = کھیر = کھِ+ی+ر	घड़ी = گھڑی = گھ+ڑ+ی	अलम = علم = عَ+لَ+م
नाक = ناک = ن+ا+ک	कान = کان = ک+ا+ن	इल्म = عِلم = عِ+لْ+م
क़लम = قلم = قَ+لَ+م	कली = کلی = ک+ل+ی	गई = گئی = گ+ء+ی
गया = گیا = گ+ے+ا	दर्द = دَرد = دَ+ر+د	ज़र्द = زَرد = زَ+ر+د
काम = کام = ک+ا+م		

शराब पीना बुरी बात है = شراب پینا بُری بات ہے

तोते के पंख हरे होते है = توتے کے پنکھ ہرے ہوتے ہیں

यह अनार खट्टा है = یہ انار کھٹا ہے

फ़ुरसत हो तो ये क़िस्सा सुनो = فُرصت ہو تو یہ قصہ سُنو

उसका मकान बहुत पुराना है = اُس کا مکان بہت پُرانا ہے

उस किताब की क्या क़ीमत है = اُس کتاب کی کیا قیمت ہے

दुनिया में हलचल मची है = دُنیا میں ہل چل مچی ہے

वह अभी दुकान की तरफ जाते थे = وہ ابھی دُوکان کی طَرف جاتے تھے

ख़ुशी से वह लड़का ज़ोर से हंसा = خوشی سے وہ لڑکا زور سے ہنسا۔

ताजमहल देखकर हैरत होती है = تاج محل دیکھ کر حیرت ہوتی ہے

जब चांद निकला तारे मान्द पड़ गये = جب چاند نکلا تارے ماند پڑ گئے

हाथी सबसे बड़ा जानवर है = ہاتھی سَب سے بڑا جانور ہے

सब दोस्त हैं अपने मतलब के = سب دوست ہیں اپنے مطلب کے

दुनिया में किसी का कोई नहीं = دُنیا میں کسی کا کوئی نہیں

आम सबसे अच्छा फल है = آم سب سے اچھا پھل ہے

उसका चेहरा चांद जैसा है = اُس کا چہرہ چاند جَیسا ہے

नन्हा पौधा ज़मीन से निकला = ننھا پودھا زمین سے نکلا

जूता और मोज़े पहन लो = جوتا اور موزے پہن لو

मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हैं = مسجد میں نماز پڑھتے ہیں

मन्दिर में मूरत के दर्शन होते हैं = مَندر میں مورت کے درشن ہوتے ہیں

ठंडा पानी पी लो = ٹھنڈا پانی پی لو

यह रास्ता कहां जाता है। = یہ راستا کہاں جاتا ہے

मच्छर काटता है = مچھر کاٹتا ہے

मेरे साथ साथा दौड़ो = میرے ساتھ ساتھ دوڑو

बिस्तर में खटमल हों तो नींद कहां = بستر میں کھٹمل ہوں تو نیند کہاں

सुबह उठना सेहत के लिए अच्छा है = صبح اُٹھنا صحت کے لئے اچھا ہے

चार अक्षरों के शब्द

उर्दू = اُردؤ = اُ+ر+د+ؤ	शराब = شراب = ش+ر+ا+ب	आँख = آنکھ = ا+ا+ں+کھ
अरबी = عربی = ع+ر+ب+ی	सहरा = صحرا = ص+ح+ر+ا	चाँद = چاند = چ+ا+ں+د
हिन्दी = ہندی = ہِ+ن+د+ی	ज़ालिम = ظالم = ظ+ا+لِ+م	पतंग = پتنگ = پ+ت+ں+گ
बादल = بادل = ب+ا+د+ل	फुरसत = فرصت = فُ+ر+ص+ت	टांग = ٹانگ = ٹ+ا+ں+گ
बरसा = برسا = بَ+ر+س+ا	क़िस्सा = قصہ = قِ+ص+ص+ہ	जंगल = جنگل = جَ+ن+گ+ل
तोता = توتا = ت+و+ت+ا	कोशिश = کوشش = ک+و+شِ+ش	अब्बा = ابّا = اَ+ب+ب+ا
थोड़ा = تھوڑا = تھ+و+ڑ+ا	केला = کیلا = ک+ے+ل+ا	अच्छा = اچھا = ا+چھ+چھ+ا
ठन्डा = ٹھنڈا = ٹھ+ن+ڈ+ا	कहाँ = کہاں = ک+ہ+ا+ں	बिल्ली = بلّی = بِ+ل+ل+ی
जूता = جوتا = ج+ؤ+ت+ا	कहीं = کہیں = ک+ہ+ی+ں	गन्ना = گنّا = گ+ن+ن+ا
झूटा = جھوٹا = جھ+ؤ+ٹ+ا	खटमल = کھٹمل = کھَ+ٹ+م+ل	दिल्ली = دِلّی = دِ+ل+ل+ی
चिड़िया = چڑیا = چِ+ڑ+ی+ا	गरमी = گرمی = گ+ر+م+ی	कव्वा = کوّا = ک+و+و+ا
छतरी = چھتری = چھ+ت+ر+ی	मस्जिद = مسجد = مَ+س+جِ+د	खट्टा = کھٹّا = کھَ+ٹ+ٹ+ا
दरया = دَریا = دَ+ر+ی+ا	मन्दिर = مندر = مَ+ن+دِ+ر	मच्छर = مچھر = م+چھ+چھ+ر

चार अक्षरों के वाक्य

हिन्दी से उर्दू सीखो = ہندی سے اردؤ سیکھو

अरबी अरब की ज़बान है = عربی عرب کی زبان ہے

यहाँ आज बहुत बारिश हुई = یہاں آج بہت بارش ہوئی

चिड़िया चूँ चूँ करके उड़ गई = چڑیا چوں چوں کر کے اُڑ گئی

सर्दी से जुकाम और बुख़ार हो गया = سردی سے زُکام اور بخار ہو گیا

गर्मी में प्यास बहुत लगती है = گرمی میں پیاس بہت لگتی ہے

छः अक्षरों के शब्द

शायरी = شاعِری = ش+ا+ع+رِ+ی

औरतों = عَورَتوں = عَ+و+ر+ت+و+ں

अक़्लमंद = عقلمند = ع+ق+ل+م+ن+د

फ़कीरों = فقیروں = فَ+ق+ی+ر+و+ں

कुरबानी = قُربانی = قُ+ر+ب+ا+ن+ی

मुशायरा = مشاعرہ = مُ+ش+ا+ع+ر+ا

मुलाक़ात = ملاقات = م+ل+ا+ق+ا+ت

नाकाफ़ी = ناکافی = ن+ا+ک+ا+ف+ی

वाहियात = واہیات = و+ا+ہِ+ی+ا+ت

हज़ारों = ہزاروں = ہ+ز+ا+ر+و+ں

यादगार = یادگار = ی+ا+د+گ+ا+ر

शरमिन्दा = شَرمِندہ = ش+ر+م+ن+د+ہ

आँखें = آنکھیں = ا+ا+ں+کھ+ے+ں

इन्तज़ार = اِنتظار = اِ+ن+تِ+ظ+ا+ر

इश्तेहार = اِشتہار = اِ+ش+تِ+ہ+ا+ر

इत्तफ़ाक़ = اِتّفاق = اِ+ت+تِ+ف+ا+ق

इन्क़िलाब = انقلاب = اِ+ن+قِ+ل+ا+ب

बारादरी = بارادری = ب+ا+ر+ا+د+ر+ی

पाजामा = پاجامہ = پ+ا+ج+ا+م+ہ

पंजाबी = پنجابی = پ+ن+ج+ا+ب+ی

तनख़्वाह = تنخواہ = تَ+ن+خ+و+ا+ہ

दूसरों = دوسروں = د+ؤ+س+ر+و+ں

दरवाज़ा = دَروَازہ = دَ+ر+وَ+ا+ز+ہ

पांच और छः शब्दों के वाक्य

कल शाम से मेरे दोस्त की तबीयत ठीक नहीं है। کل شام سے میرے دوست کی طبیعت ٹھیک نہیں ہے

मुशायरे में कई शायर अपनी अपनी ग़ज़लें सुनाते हैं। مشاعرے میں کئی شاعر اپنی اپنی غزلیں سناتے ہیں

मेहनत करो इम्तेहान में कामयाब हो जाओगे। محنت کرو امتحان میں کامیاب ہو جاؤ گے

दीहात की औरतें बहुत मेहनती होती हैं। دیہات کی عورتیں بہت محنتی ہوتی ہیں۔

गुलाब की कई किस्में होती हैं। گلاب کی کئی قسمیں ہوتی ہیں۔

हर शख़्स को तरक़्क़ी करने की तमन्ना होती है। ہر شخص کو ترقّی کرنے کی تمنا ہوتی ہے

अगर आप मुझको मुलाज़िमत देंगे اگر آپ مجھ کو ملازمت دیں گے

तो कभी आपको शिकायत का मौक़ा न दूंगा تو کبھی آپ کو شکایت کا موقع نہ دوں گا

पांच अक्षरों की शब्दावली

दौड़ना = دوڑنا = دَ+و+ڑ+ن+ا

रूमाल = رُومال = رُ+وٗ+م+ا+ل

ज़िन्दगी = زِندگی = زِ+ن+دِ+گ+ی

सामने = سامنے = س+ا+م+ن+ے

सुनहरा = سنہرا = سُ+نَ+ہ+ر+ا

सफ़ाई = صفائی = صَ+ف+ا+ء+ی

ज़रूरत = ضَرورَت = ضَ+ر+وٗ+ر+ت

तबीअत = طَبِیعَت = طَ+ب+ی+ع+ت

तरीके = طریقے = طَ+رِ+ی+ق+ے

बैठता = بَیٹھتا = ب+ے+ٹھ+ت+ا

तिजारत = تجارت = ت+ج+ا+ر+ت

तहज़ीब = تہذیب = تَ+ہ+ذِ+ی+ب

तरक़्क़ी = ترَقّی = تَ+رَ+ق+ق+ی

तालीम = تعلیم = تَ+ع+لِ+ی+م

तमन्ना = تمنّا = ت+م+ن+ن+ا

ठहरना = ٹھہرنا = ٹھ+ہَ+ر+ن+ا

जवानी = جوانی = ج+و+ا+ن+ی

जाड़ों = جاڑوں = ج+ا+ڑ+و+ں

हकीक़त = حقیقت = حَ+ق+ی+ق+ت

हुकूमत = حکومت = حُ+ک+وٗ+م+ت

ख़ुशबू = خُوشبو = خُ+و+ش+ب+و

ख़ामोश = خاموش = خ+ا+م+و+ش

इजाज़त = اِجازت = اِ+ج+ا+ز+ت

अजनबी = اَجنبی = اَ+ج+نَ+بِ+ی

अलफ़ाज़ = الفاظ = اَ+ل+ف+ا+ظ

अधूरा = اَدھورا = اَ+دھ+وٗ+ر+ا

अमरूद = اَمرُود = اَ+م+ر+وٗ+د

बिलकुल = بالکُل = بِ+ا+ل+کُ+ل

तुम्हारा = تمھارا = تُ+مھ+ا+ر+ا

पहचान = پہچان = پ+ہ+چ+ا+ن

पत्तों = پتّوں = پ+ت+ت+و+ں

इनायत = عِنایَت = عِ+ن+ا+یَ+ت

गज़लों = غزلوں = غَ+ز+ل+و+ں

फरयाद = فریاد = ف+ر+ی+ا+د

क़िसमें = قِسمیں = قِ+س+مَ+ے+ں

कलाई = کلائی = کَ+ل+ا+ءِ+ی

लिखावट = لکھاوٹ = ل+کھ+ا+وَ+ٹ

मुहब्बत = مُحبّت = مُ+حَ+ب+ب+ت

महसूस = محسوس = مَ+ح+س+و+س

मालूम = مَعلوم = م+ع+ل+وٗ+م

नौकरी = نوکری = نَ+و+ک+ر+ی

वज़ीफ़ा = وَظیفہ = وَ+ظِ+ی+ف+ہ

हंसता = ہنستا = ہ+ں+س+ت+ا

यादें = یادیں = ی+ا+د+ے+ں

उर्दू लिपि की कुछ और बातें जो सही पढ़ने में सहायता देती हैं।

(1) छोटी हे (ہ) जब किसी फ़ारसी शब्द आदि के अन्त में आती है उस समय उसकी आवाज़ (स्वर) "ह" की नहीं होती बल्कि "आ" पढ़ी जाती है। ऐसा अधिकतर उन फ़ारसी या अरबी के शब्दों में होता जो उर्दू में प्रचलित हैं। किसी स्थान या किसी गिनती के अन्त में भी अगर "आ" का सुर निकल रहा है तो उसको छोटी "हे" (ہ) पर समाप्त करते हैं, शब्द के अन्त में (ہ) को जोड़ना हो तो

(ـہ) का चिन्ह जोड़ देते हैं।

फ़ारसी के शब्द

बच्चा = بچّہ = ب+چ+چ+ہ

खाना (घर) = خانہ = خ+ا+ن+ہ

परदा = پردہ = پ+ر+د+ہ

सरमाया (पूंजी) = سرمایہ = س+ر+م+ا+ی+ہ

रास्ता = راستہ = ر+ا+س+ت+ہ

मैकदा (मधुशाला) = مےکدہ = م+ے+ک+د+ہ

जामेआ = جامعہ = ج+ا+م+ع+ہ

जुरआ (घूंट) = جرعہ = ج+ر+ع+ہ

फ़ायदा = فائدہ = ف+ا+ء+د+ہ

दोबारा (दूसरी बार) = دوبارہ = د+و+ب+ا+ا+ر+ہ

वग़ैरा (आदि) = وغیرہ = و+غ+ے+ر+ہ

पटना = پٹنہ = پ+ٹ+ن+ہ

बारा = بارہ = ب+ا+ر+ہ

स्थानों के नाम

कलकत्ता = کلکتہ = ک+ل+ک+ت+ت+ہ

पटना = پٹنہ = پ+ٹ+ن+ہ

आगरा = آگرہ = ا+ا+گ+ر+ہ

अमरीका = امریکہ = ا+م+ر+ی+ک+ہ

गिनतियां

ग्यारा = گیارہ = گ+ی+ا+ر+ہ

बारा = بارہ = ب+ا+ر+ہ

तेरा = تیرہ = ت+ے+ر+ہ

चौदा = چودہ = چ+و+د+ہ

पंदरा = پندرہ = پ+ن+د+ر+ہ

सोला = سولہ = س+و+ل+ہ

सत्तरा = سترہ = س+ت+ت+ر+ہ

अट्ठारा = اٹھارہ = ا+ٹھ+ٹھ+ا+ر+ا

اپنی خیریت سے جلد مُطلع کرو۔
अपनी ख़ैरियत से जल्द मुत्तिला करो।

تمھارا خط ایک عرصے سے نہیں آیا۔
तुम्हारा ख़त एक अरसे से नहीं आया।

ہمارے ملک نے آزادی سن ۱۹۴۷ میں حاصل کی۔
हमारे मुल्क ने आज़ादी सन् 1947 में हासिल की।

گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں۔
गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं।

زندگی کا جو لمحہ بیت گیا وہ بیت گیا۔
ज़िन्दगी का जो लमहा बीत गया वह बीत गया।

عقل مند لوگ وقت کی قیمت پہچانتے ہیں۔
अक़्लमन्द लोग वक़्त की क़ीमत पहचानते हैं।

صبح سورج اپنی کرنیں پھیلاتا ہے۔
सुब्ह सूरज अपनी किरनें फैलाता है।

آزادی سے پہلے اُردو کا رواج عام تھا۔
आज़ादी से पहिले उर्दू का रवाज आम था।

عدالت نے اُن کو قید بامَشقّت کا حکم دیا۔
अदालत ने उनको क़ैद बा मशक़्क़त का हुक्म दिया।

اِتّحاد میں طاقت ہے۔
इत्तेहाद में ताक़त है।

ترقّی کرنا ہے تو محنت کرنا سیکھو۔
तरक़्क़ी करना है तो मेहनत करना सीखे।

عورتوں کو مَردوں کے برابر حقوق مِلنا چاہیے۔
औरतों को मर्दों के बराबर हुकूक मिलना चाहिए।

सात और उससे अधिक अक्षरों के शब्द

اَ+ن+گ+ر+ے+ز+ی = انگریزی = अंग्रेज़ी

ک+ہ+ا+نِ+ی+ا+ں = کہانیاں = कहानियाँ

اِ+س+تِ+ع+م+ا+ل = استعمال = इस्तेमाल

اَ+ٹھ+کھ+ے+لِ+ی+ا+ں = اٹھکیلیاں = अठखेलियाँ

ک+ا+ر+خ+ا+ن+ہ = کارخانہ = कारख़ाना

ب+ا+د+ش+ا+ہَ+ت = بادشاہت = बादशाहत

س+ا+م+ر+ا+جِ+ی+ت = سامراجیت = सामराजियत

ج+ا+گ+ی+ر+د+ا+ر = جاگیردار = जागीरदार

ز+م+ی+ں+د+ا+ر = زمیں دار = जमींदार

ش+ا+د+م+ا+ن+ی = شادمانی = शादमानी

ص+ن+د+وُ+ق+چ+ہ = صَندُوقچہ = संदूक़चा

طِ+لِ+س+م+ا+ت+ی = طلسماتی = तिलिसमाती

عِ+ب+ا+ر+ت+ی+ں = عبارتیں = इबारतें

ف+و+ج+د+ا+ر+ی = فَوجداری = फ़ौजदारी

گ+ن+گ+ن+ا+ن+ا = گنگنانا = गुनगुनाना

مُ+ب+ا+ر+ک+ب+ا+د+ی = مبارکبادی = मुबारकबादी

ن+ا+گ+ہ+ا+ن+ی = ناگہانی = नागहानी

وَ+ر+غ+ل+ا+ن+ا = وَرغلانا = वरग़लाना

ہُ+نَ+ر+م+ن+د+ی = ہنرمندی = हुनरमंदी

(3) कुछ अरबी के शब्द जिनका अलिफ़ पर अंत होता है अगर उस अलिफ़ के ऊपर दो ज़बर का चिन्ह (ً) लगा दिया जाता है तो उस समय अलिफ़ की आवाज़ के बजाय "न" की आवाज़ (सुर) निकाली जाती है, जैसे–

फ़ौरन (तुरन्त) = فوراً = ف+وَ+ر+اً

इत्तिफ़ाक़न = اتفاقاً = اِ+تّ+تِ+ف+ا+ق+اً

मसलन = مثلاً = مَ+ث+ل+اً

यक़ीनन = یقیناً = ی+ق+ی+ن+اً

उमूमन = عموماً = عُ+م+وُ+م+اً

ख़ुसूसन = خصوصاً = خُ+ص+وُ+ص+اً

क़स्दन = قصداً = ق+ص+د+اً

(4) कुछ फ़ारसी के शब्दों में वाव (و) का प्रयोग केवल पेश चिन्ह (ُ) के स्थान पर होता है, वाव (و) अपना कोई सुर नहीं निकालता, जैसे–

खुश = خُوش | खुद = خُود
ख़ाहिश / ख़्वाहिश = خُواہش | ख़्वाब = خُواب
खुर्द (छोटा) = خُورد | खुशामद = خُوشامد

(5) हमज़ा (ء) की आवाज़ आधे अलिफ़ (ا) की होती है। जब यह आवाज़ किसी शब्द में و، ی या ے के साथ आती है तो हमज़ा लगा दिया जाता है, जैसे–

आये = آئے | आओ = آؤ
गये = گئے | जाओ = جاؤ
आई = آئی | सूई = سوئی
गई = گئی | रुई = روئی
लखनऊ = لکھنؤ | तेइस (23) = تیئیس

(2) (i) उर्दू में कुछ शब्द अरबी भाषा के ऐसे प्रयोग होते हैं जिनके प्रारम्भ में अलिफ़ (ا) लाम (ل) लगे होते हैं। अगर वे शब्द निम्नलिखित 14 अक्षरों से आरम्भ हों तो उन में लाम (ل) पढ़े नहीं जाते। इन 14 अक्षरों को "हुरूफ़ शमसी" (सूरज वंशी अक्षर)कहते हैं। वह यह हैं :–

ت۔ ث۔ د۔ ذ۔ ر۔ ز۔ س۔ ش۔ ص۔ ض۔ ط۔ ظ۔ ل۔ ن

नोट :– अगर ا और ل वाला शब्द पहले के किसी शब्द से जुड़ा होता है तो ا और ل दोनों नहीं पढ़े जाते।

जैसे (उदाहरण) :–

अद्दुनया = اَلدُّنیا अशशम्स = اَلشّمس अद्दहर = الدہر

दारुससल्तनत = دارالسّلطنت निज़ामुद्दीन = نظام الدّین

इन शब्दों में अलिफ़ और लाम (ل ا) के सुर पढ़े नहीं गये हैं।

(ii) और अगर ये अरबी के शब्द नीचे लिखे 14 अक्षरों से आरम्भ हों तो उन में "ल" (ل) पढ़ा नहीं जाता। अगर वह शब्द के आरम्भ में आता है तो पढ़ा जाता है। ये 14 अक्षर "हुरुफ़ क़मरी" (चन्द्र वंशी) कहलाते हैं।

ی	ہ	و	م	ک	ق	ف	غ	ع
ये	हे	वाव	मीम	काफ़	क़ाफ़	फ़े	ग़ैन	ऐन

خ	ح	ج	ب	ا
ख़े	हे	जीम	बे	अलिफ़

उदाहरण :–

अल अर्ज़ = اَلارض अल कमर = اَلقمر अल जबल = اَلجبل

बैतुल मुक़द्दस = بیتُ المقدّس शेख़ुल जामेआ = شیخُ الجامعہ

नोटः– अगर ऐसे शब्दों में अलिफ़ और लाल (ل ا) से पहले अलिफ़ (ا) या ये (ی) आये तो इस अलिफ़ या ये (ی)से पहले के अक्षर में ज़ेर चिन्ह लगा कर पढ़ते हैं, जैसे –

बिज़ ज़रूर = بِالضّرور बिलकुल = بِالکُل फ़िलहाल = فی الحال

बिल उमूम = بِالعموم फ़िल हकीकत = فی الحقیقت

وقت

دُنیا میں ہر چیز خریدی جاسکتی ہے لیکن ایک چیز اَیسی ہے جسے بڑی سے بڑی قیمت دے کر بھی نہیں خریدا جاسکتا اَور وہ ہے وَقت۔ جو وَقت گزر گیا وہ گزر گیا۔ اُسے واپس نہیں لایا جاسکتا۔ زندگی کا جو لمحہ بیت گیا وہ بیت گیا اسے پھر سے زندہ نہیں کیا جاسکتا۔ وہ صرف ماضی میں زندہ رَہ سکتا ہے اُسے صرف یاد کیا جاسکتا ہے۔ اُس وقت سے اگر اچھا کام لیا ہے تو اُس کام پر خوش ہوا جاسکتا ہے۔ اُسے برباد کیا ہے تو اُس پر افسوس کیا جاسکتا ہے لیکن اسے واپس نہیں لایا جاسکتا۔

वक़्त

दुनिया में हर चीज़ ख़रीदी जा सकती है लेकिन एक चीज़ ऐसी है जिसे बड़ी से बड़ी क़ीमत देकर भी नहीं ख़रीदा जा सकता और वो है वक़्त जो वक़्त गुज़र गया वो गुज़र गया उसे वापस नहीं लाया जा सकता ज़िन्दगी का जो लम्हा बीत गया वो बीत गया उसे फिर से ज़िन्दा नहीं किया जा सकता। वो सिर्फ़ माज़ी में ज़िन्दा रह सकता है। उसे सिर्फ़ याद किया जा सकता है। उस वक़्त से अगर अच्छा काम लिया है तो उस काम पर ख़ुश हुआ जा सकता है। उसे बरबाद किया है तो उस पर अफ़सोस किया जा सकता है लेकिन उसे वापस नहीं लाया जा सकता।

माजी = बीता हुआ समय

गद्यांश

مور

برسات کا زمانہ ہے۔ وہ دیکھو، پیڑ کے نیچے مور ناچ رہا ہے۔ وہ اِس وقت بہت ہی خُوش ہے۔ گردن اُٹھا اُٹھا کر اور چاروں طرف گھوم گھوم کر بڑی ترنگ میں ناچ رہا ہے۔ اُس کے رنگ برنگ کے پر کیسے چمک دار ہیں اور کس قدر پیارے معلوم ہوتے ہیں۔ اُس کی آواز بھی بہت پیاری ہوتی ہے۔ جب بولتا ہے تو سارا جنگل گونج اُٹھتا ہے۔ مور اپنے رہنے کے لیے گھونسلا نہیں بناتا۔ وہ زیادہ اُڑ بھی نہیں سکتا۔ بس ایک پیڑ سے اُڑ کر دوسرے پیڑ پر پہنچ جاتا ہے۔ ہاں زمین پر بہت تیز دوڑتا ہے۔ سال میں ایک بار اُس کے سب پَر گِر جاتے ہیں اور دوسرے پر نکل آتے ہیں۔ مور کے پروں سے لوگ مورچھَل اور پنکھے بناتے ہیں۔

मोर

बरसात का ज़माना है। वो देखो, पेड़ के नीचे मोर नाच रहा है। वह इस वक़्त बहुत ही ख़ुश है। गर्दन उठा–उठा कर और चारों तरफ़ घूम–घूम कर बड़ी तरंग में नाच रहा है। उसके रंग–बिरंग के पर कैसे चमकदार हैं और किस क़दर प्यारे मालूम होते हैं। उसकी आवाज़ भी बहुत प्यारी होती है। जब बोलता है तो सारा जंगल गूंज उठता है। मोर अपने रहने के लिए घोंसला नहीं बनाता। वो ज़्यादा उड़ भी नहीं सकता, बस एक पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ पर पहुंच जाता है, हां जमीन पर वह बहुत तेज़ दौड़ता है। साल में एक बार उसके पर गिर जाते हैं और दूसरे पर निकल आते हैं। मोर के परों से लोग़ मोरछल और पंखे बनाते हैं।

नोटः– पहले ऊपर लिखे उर्दू के लेख को ख़ुद (स्वयं) पढ़ने की कोशिश कीजिए, उसके बाद हिन्दी लेख देखिये।

कविता

بہار کے دن

آیا ہے بہار کا زمانہ
کلیوں کے نکھار کا زمانہ

کلیاں کیا کیا چٹک رہی ہیں
ساری رَوِشیں مہک رہی ہیں

ہلکی ہلکی یہ اُن کی خُوشبو
پھیلی ہوئی ہے چمن میں ہر سُو

چڑیاں گاتی ہیں گیت پیارے
سنتے ہیں چمن میں پھول سارے

کونپل ہر اک ہے کیسی پیاری
سبزی میں جھلک رہی ہے سرخی

کتنی راحت فزا ہوا ہے
گویا جَنّت کا در کھلا ہے

خوش خوش ہر ایک آدمی ہے
ہر شے میں بلا کی دل کشی ہے

یہ صبح کا دل فریب منظر
یہ شام کا حسن رُوح پَرور

یہ رات کو چاندنی کا عالم
اللہ رے، بے خودی کا عالم

کیسی دل چسپ چاندنی ہے
چادر اک نور کی تنی ہے

ہر دل میں اُمنگ کس قدر ہے
سب پر ہی بہار کا اثر ہے

बहार के दिन

आया है बहार का ज़माना
कलियों के निखार का ज़माना

कलियां क्या–क्या चटक रही हैं
सारी रविशें महक रही हैं

हल्की–हल्की यह उनकी खुशबू
फैली हुई है चमन में हर सू

चिड़ियां गाती हैं गीत प्यारे
सुनते हैं चमन में फूल सारे

कोंपल हर एक है कैसी प्यारी
सब्ज़ी में झलक रही है सुर्खी

कितनी राहत फ़ज़ा हवा है
गोया जन्नत का दर खुला है

खुश खुश हर एक आदमी है
हर शय में बला की दिलकशी है

यह सुब्ह का दिल फ़रेब मन्ज़र
यह शाम का हुस्ने रुह परवर

यह रात को चांदनी का आलम
अल्लाह रे, बे–खुदी का आलम

कैसी दिलचस्प चांदनी है
चादर एक नूर की तनी है

हर दिल में उमंग किस क़दर है
सब पर ही बहार का असर है

نِفاق

ایک ضعیف آدمی کے بہت سے بیٹے تھے جو آپس میں اکثر لڑتے رہتے تھے۔ ضعیف باپ نے بہت سی تدبیریں کیں لیکن کوئی کارآمد نہ ہوئی۔ آخرکار اُس نے یہ حکمت کی کہ اپنے سب لڑکوں سے کہا کہ میرے سامنے چھوٹی چھوٹی لکڑیوں کا ایک گٹھر لاؤ۔ جب وہ آ گیا اُس نے حکم دیا کہ تم سب ایک کے بعد ایک اپنی پوری طاقت کے ساتھ کوشش کرو اور دیکھو کہ تم میں سے اِسے کوئی توڑ سکتا ہے۔ اُن سبھوں نے کوشش کی لیکن توڑ نہ سکے۔ بعدازاں اُس بزرگ نے حکم دیا کہ گٹھر کھول دیا جائے اور ایک ایک لکڑی اپنے ہر ایک بیٹے کو دے کر فرمایا کہ اب توڑنے کی کوشش کرو۔ ہر ایک نے اُن کو بہ آسانی توڑ لیا۔ تو باپ نے اُن کی طرف مخاطب ہو کر یہ کہا: ''اے بیٹو! اِتفاق کی قُوّت پر غور کرو۔ اگر تم اِسی طرح سے محبت کے ساتھ مل جل کر رہو گے تو کسی انسان کی جرأت نہ ہوگی کہ تم کو نقصان پہنچا سکے۔ اور اگر آپس میں لڑو گے تو ایک ایک کر کے سب تباہ ہو جاؤ گے کیونکہ نفاق آپس کے زور کو گھٹا دیتا ہے۔

निफ़ाक़

एक ज़ईफ़ आदमी के बहुत से बेटे थे जो आपसे में अक्सर लड़ते रहते थे। ज़ईफ़ बाप ने बहुत सी तदबीरें कीं लेकिन कोई कारामद न हुई। आख़िरकार उसने यह हिकमत की कि अपने सब लड़कों से कहा कि मेरे सामने छोटी–छोटी लकड़ियों का एक गट्ठर लाओ। जब वो आ गया उसने हुक्म दिया कि तुम सब एक के बाद एक अपनी पूरी ताक़त के साथ कोशिश करो और देखो कि तुम में से कोई इसे तोड़ सकता है। उन सभी ने कोशिश की लेकिन तोड़ न सके। बाद अज़ां उस बुज़ुर्ग ने हुक़्म दिया कि गट्ठर खोल दिया जाय और एक–एक लकड़ी अपने हर एक बेटे को देकर फ़रमाया कि अब तोड़ने की कोशिश करो। हर एक ने उनको बआसानी तोड़ लिया तो बाप ने उनकी तरफ़ मुख़ातिब होकर यह कहा–''ऐ बेटो, इत्तफ़ाक़ की कुव्वत पर ग़ौर करो, अगर तुम इसी तरह से मुहब्बत के साथ मिलजुल कर रहोगे तो किसी इन्सान की जुरअत न होगी कि तुमको नुक़सान पहुंचा सके और अगर आपस में लड़ोगे तो एक–एक करके सब तबाह हो जाओगे– क्योंकि निफ़ाक़ आपस के ज़ोर को घटा देता है।

बाद अज़ां = उसके बाद

निफ़ाक़ = बैर, दुश्मनी

غالبؔ کی غزل

نُکتہ چیں ہے غمِ دِل اُس کو سنائے نہ بنے — کیا بنے بات جہاں بات بنائے نہ بنے

میں بلاتا تو ہوں اُس کو مگر اے جذبۂ دل — اُس پہ بَن جائے کچھ ایسی کہ بن آئے نہ بنے

اِس نزاکت کا برا ہو وہ بھلے ہیں تو کیا — ہاتھ آئیں تو اُنھیں ہاتھ لگائے نہ بنے

بوجھ وہ سر سے گرا ہے کہ اُٹھائے نہ اُٹھے — کام وہ آن پڑا ہے کہ بنائے نہ بنے

عشق پر زور نہیں، ہے یہ وہ آتش غالبؔ
کہ لگائے نہ لگے اور بجھائے نہ بنے

ग़ालिब की ग़ज़ल

(1) नुकता चीं है,. ग़मे दिल उसको सुनाये न बने।
क्या बने बात जहां बात बनाये न बने।

(2) मैं बुलाता तो हूं उंसको मगर ऐ जज़ब–ए–दिल
उस पे बन जाये कुछ ऐसी कि बिन आये न बने।

(3) इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।

(4) बोझ वो सिर से गिरा है कि उठाये ने उठे
काम वो आन पड़ा है कि बनाये ने बने।

(5) इश्क़ पर ज़ोर नहीं, है ये वो आतश, ग़ालिब
कि लगाए न लगे और बुझाये न बने।

नोटः– पहली पंक्ति में (ग़म दिल =غمِ دِل) में ''म'' (م)के नीचे ज़ेर (ِ) चिन्ह का प्रयोग वही ''इज़ाफ़त'' है जो ''तरान–ए–हिन्दी'' के नोट में बताई गई है।

ترانۂ ہندی

سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا
ہم بلبلیں ہیں اس کی ، یہ گلستاں ہمارا

پربت وہ سب سے اونچا ہم سایہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا

مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستاں ہمارا

یونان و مصر و روما سب مٹ گئے جہاں سے
اب تک مگر ہے باقی نام و نشاں ہمارا

کچھ بات ہے کہ ہستی مٹتی نہیں ہماری
صدیوں رہا ہے دشمن دورِ زماں ہمارا

اقبال کوئی محرم اپنا نہیں جہاں میں
معلوم کیا کسی کو دردِ نہاں ہمارا

तरान-ए-हिन्दी

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलसितां हमारा

पर्वत वह सबसे ऊंचा हमसाया आसमां का
वह संत्री हमारा वह पासबां हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा

यूनानो मिस्रो रोमा सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाक़ी नामो निशां हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदयों रहा है दुशमन दौरे ज़मां हमारा

"इक़बाल" कोई महरम अपना नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा

नोटः— इस कविता में देखो कि दो शब्दों का जोड़ दो जगह लाया गया है دورِ زماں = "दौरे ज़मां" (समय का चक्कर) और دردِ نہاں = दर्दे निहां अन्तर दाह पहले शब्द में "रे" (ر) के नीचे और दूसर शब्द में "दाल" (د)के नीचे "ज़ेर" (ـِ) का चिन्ह लगा दिया गया है। ऐसा दो फ़ारसी के शब्दों में होता है और इसे "इज़ाफ़त" कहते हैं। यह 'का, की, के, का संबन्ध बताता है, अर्थात "समय का चक्कर" और "अपने अन्दर की दाह"। फ़ारसी में "का", को, के, का प्रयोग नहीं होता। हां, ऐसे जोड़ वाले दो शब्दों में से पहले के आख़िरी अक्षर के नीचे "ज़ेर" (ـِ)का चिन्ह लगा देते हैं। आख़िरी अक्षर 'ह' (ہ)हो तो उस पर हमज़ा (ٔ)लगाते हैं जैसे तरानये हिन्दी, पाये यार

पाये यार (दोस्त का पांव)

उर्दू गिनतियां

۱۰۰۰	۱۰۰	۱۰	۹	۸	۷	۶	۵	۴	۳	۲	۱
१०००	१००	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१

नोट :– आख़िर में यह बात याद रखिये कि उर्दू लिखावट में शब्दों की पहचान पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है चिन्ह पर नहीं। चिन्ह शुरू में शब्द को सीखने के लिये तो आवश्यक हैं लेकिन जब आप वह शब्द अच्छी तरह पहचान जायें तो फिर चिन्ह लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ती, जैसे शब्द ''ग़लत'' (غَلَط) में ''ग'' और ''ल'' पर ज़बर का चिन्ह है लेकिन एक दफ़ा जब आप जान गये कि غلط ऐसे लिखा जाता है तो फिर उसे आप ''ग़लत'' (غَلَط) के सिवा और कुछ नहीं पढ़ेंगे।

اُترپردیش اُردو اکادمی
لکھنؤ